Impact Factor : 0.4521 (UIF)
ISSN:- 2393-8900

Research Article

जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों में आधुनिकता बोध

प्रा.डॉ.गंगाधर धुळप्पा बिराजदार
हिंदी विभाग प्रमुख, दयानंद कला व शास्त्र महाविद्यालय, सोलापुर.

प्रस्तावना :-

जगदीशचंद्र माथुर जी हिंदी के सफल नाटककार है। जगदीशचंद्र माथुर ने शिल्प की अपेक्षा कथ्य को अधिक महत्व दिया है। उनमें समसामयिक बोध के साथ-साथ ऐतिहासिक चिंतन है। उन्होंने सामयिक बोध के आश्रय से अपने कथ्य को शक्ति प्रदान की है।

माथुरजी का जन्म 1917 में शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उन्होंने संगीत, नाटक अकादमी, आकाशवाणी महानिदेशक तथा अन्य सरकारी विभाग में ऊँचे पद विभूषित किए हैं। वे हिंदी के महत्वपूर्ण नाटककार, नाटक और एकांकी में नवीनता, युवक-युवतियों तथा पुरूष-नारियों की आधुनिक प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालनेवाले प्रतिभासंपन्न साहित्यकार साबित हुए है। उनके कोणार्क, शारदीया, पहला राजा, दशरथ नंदन, कँवरसिंह की टेक आदि नाटक प्रसिध्द हुए हैं। साथ ही भोर का तारा, ओ मेरे सपने, गगन-सवारी आदि एकांकी संग्रह हैं।

माथुर जी के नाटकों में घटनाओं का प्रारंभ, विकास और चरमसीमा का निर्माण वैज्ञानिक ढंग से हुआ है।

जगदीशचंद्र माथुर के नाटक 'कोणार्क' में समकालीन युग के ठेकेदारों, अधिकारियों और पूँजीपतियों द्वारा मजदूर वर्ग के शोषण को और शोषितों के प्रतिकार को अभिव्यक्ति दी है। नाटककार ने शिल्पियों के माध्यम से मजदूरों में व्याप्त साम्प्रतिक वर्ग-संघर्ष की चेतना को ही प्रस्तुत किया है- "मगर यह तो उचित नहीं कि जब चारों ओर अत्याचार और अकाल ही लपटें बढ रही हो, शिल्पी एक शीतल और सुरक्षित कोने में यौवन और विलास की मूर्तियाँ ही बनाता रहे।"

विशु और धर्मपद के माध्यम से नाटककार माथुर जी ने दो पीढियों के अंतराल को उजागर किया है। आधुनिक संघर्षशील, बौद्धिकता संपन्न, कर्मरत, विद्रोही कलाकार को भी उभार कर रख दिया है। "सहनशील विशु तथा विद्रोही धर्मपद में जैसे कला के प्राचीन और नवीन युग मूर्तिमान हो उठे हैं।' धर्मपद में आधुनिक कलाकार का विद्रोह ही जैसे व्यक्तित्व ग्रहण कर लेता है। --- आज के राजनीतिक आर्थिक संघर्ष के जर्जर युग में कोणार्क के द्वारा और संस्कृति जैसे अपने चिरंतन उपेक्षा का विद्रोहपूर्ण संघर्ष मनुष्य के पास पहुँचा रही है।

कलाकार के गौरव और सम्मान को लेकर धर्मपद और विशु का अन्त: संघर्ष वस्तुत: आधुनिक युग के कलाकार का अंतर्मथन ही है। विशु जब अंतर्द्वन्द्व ग्रस्त होकर कहता है-"ओ अभागे कारीगर, कहाँ है तेरा गौरव, कहाँ है तेरी मौन तपस्या का पुरस्कार?" कहना सही है कि आधुनिक युग में मौन कला साधना करनेवाले सच्चे कलाकारों की पीडा को ही वाणी देता है।

विशु एक पलायनवादी कलाकार का प्रतिनिधित्व करता है, जो समाज में यथार्थ जीवन का सामना करने की अपेक्षा कला की गोद में समर्पण करने में सुख पाता है, पर मन में समायी प्रेमिका की स्मृति, व्यथा और प्रायश्चित का उदात्तीकरण कला की अथक साधना में होता है। कोणार्क का यह शिल्पी जब सहसा अपने पुत्र को पहचानता है, तो जैसे वर्षो की साधना का फल उसे मिल जाता है। पर नियति का कठोर प्रहार उससे यह सुख भी छिन लेता है। विशु की व्यथा - "भव्य मंदिरों को बनानेवाले ये हाथ सारिका और उसकी संतान के लिए एक झोपडी भी बना सके।"

Impact Factor : 0.4521 (UIF)
ISSN:- 2393-8900

राजनीतिक दुर्दान्त महत्वाकांक्षी व्यक्ति के दाँव-पेचों के षडयंत्रो से असफल एवं भग्न हुए प्रेम- संबंधों के संदर्भ में लिखा गया जगदीशचंद्र माथुर का 'शारदीया' यह हदयस्पर्शी नाटक है।

राजकीय स्वार्थ सिध्दि और महत्वाकांक्षा की पूर्ति के हेतु स्वयं के बच्चों के जीवन से खेलने की वृत्ति राजा महाराजा और सरदारों की परंपरा है। स्वार्थ सिध्दि हेतु या तो अपनी लडकी का विवाह किसी दूसरे महाराजा एवं सरदार से अथवा उनके लडके से करते थे या किसी दूसरे राजा- महाराजा एवं सरदार की लडकी का विवाह स्वयं से अथवा अपने लडके से करते थे।

साहसी, देशप्रेमी, कुशल कारीगर और निश्छल प्रेमी नरसिंहराव और अनिंद्य सुंदरी बायजाबाई बचपन के प्रेमी थे। बायजाबाई की माँ ने उन दोनों का विवाह करने का वायदा किया था, परंतु उसकी मृत्यु के पश्चात् सर्जेराव घाटगे उस वादे को तोड देता है। सर्जेराव घाटगे अपनी दुर्दान्त महत्वाकांक्षा के पूर्ति और राजकीय स्वार्थ सिध्दि के लिए बायजाबाई का विवाह उसकी ईच्छा के विरूध्द दौलतराव सिन्धिया के साथ करना चाहता है।

'पहला राजा' नाटक पौराणिक संदर्भों में आधुनिक युगबोध का एक मार्मिक चित्र उपस्थित करता है। नाटक में पृथु पुरूषार्थ और परिश्रम का प्रतीक है। प्रथम अंक में पराक्रमी, वीर, श्रेष्ठ योदधा और ऋषि-मुनियों के रक्षक का रूप, द्वितीय अंक में प्रजा नायक का रूप और तृतीय अंक में कर्म पुरूष का रूप । ये तीनों यद्यपि पृथु के ही है।

स्तुतिकर्ताओं को फटकारते हुए कहते हैं- "बंद कीजिए यह शब्दाडंबर..... अभी तो मैंने रत्तीभर भी काम नहीं किया, अभी से स्तुति कैसी ? मुझे स्तुति नहीं सहयोग चाहिए, वाणी का विलास नहीं, कर्म का उल्लास चाहिए। पृथु ऐसे पुरूषार्थी है कि बाँध बाँधने के लिए स्वयं कुदाली से मिट्टी खोदकर मजदूरों के साथ सरस्वती की धारा मोडने को सन्नध्द है। पुरूषार्थ के दो साथी है कर्म और काम। उन दोनों का समन्वय पृथु में अर्चि और उर्वि के द्वारा दिखाया गया है। अर्चि से पृथु का कामसंबंध है। उसकी पत्नी रूपा है और उर्वि उसे कर्म की प्रेरणा देती है। इस प्रकार पृथु के हाथ में कुदाली और बंशी दोनों है। कुदाली कर्म का प्रतीक है और बंशी काम का कवष पृथु का सहायक योध्दा है, जो अनार्थ होते हुए भी शत्रुओं से लडने को तैयार है। पृथु के व्यक्तित्व से आत्कृष्ट अनार्थ जातियाँ भी देश की रक्षा में प्राण-प्रण से सचेष्ट है। अत्रि उद्बोधक के रूप में मंत्रिपद पर आसीन है। उनमें और मंत्री शुक्राचार्य में मतभेद है। मुनिगण पूँजिपतियों के प्रतिनिधि है, जो स्वार्थ सिध्दि के लिए देश का अहित करने के लिए बाध्य है। सुनीथा संघर्ष में फँसी हुई आधुनिक युग की नारी है।

कहना सही है कि कुछ विशिष्ट लोगों की स्वार्थपूर्ण राजनीति एवं अधिकार-लिप्सा का कुफल सदैव निर्दोष और निरीह जनता भोगती आयी है। जिसे न तो पृथु रोक सके और न नेहरू ही। आजादी के बाद भी देश की व्यवस्था ज्यौं-की-त्यौं बनी है, जैसी वैदिक युग में थी, वैसी ही आज भी है। नाटक के क्षेत्र में उन्होंने नए प्रयोग किए है।

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि माथुर जी ने अपने नाटकों की संरचना में एक से अधिक कथ्यों को पिरोने का प्रयास किया है। जैसे आधुनिकता की संवेदना को उजागर करना, समसायिक विषयवस्तु का प्रतिनिरूपण करना और मानवीय संघर्ष तथा मानसिक द्वंद्व को रूपायित करना आदि। उनके नाटक आधुनिकता की निजी दृष्टि तथा समसामयिक युगबोध को प्रतिपादित करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1) कोणार्क- जगदीशचंद्र माथुर
2) शारदीया- जगदीशचंद्र माथुर
3) पहला राजा- जगदीशचंद्र माथुर
4) समकालीन हिंदी नाटक एवं नाटककार- डॉ.दिनेशचंद्र वर्मा
5) समकालीन रंगधर्मी नाटककार- लवकुमार लवलीन
6) हिंदी नाटक विमर्श- डॉ.देवीदास इंगळे